पुरुषार्थसिद्धयुपाय (फोल्डर नं. ००११०४)

अमृतचन्द्राचार्य विरचित – टीकाकार-पं. मक्खनलाल शास्त्री

मुख्य टाइटल

समर्पण

आशीर्वाद

संकल्प

आभार

प्रकाशकीय

प्रस्तावना

विषय सूची

मंगलाचरण ---------- १-१५

ग्रन्थ रचना करने में आचार्य का अभिप्राय ----------१५-२२

संसारी जीवों की समझ ---------- २२-२४

व्यवहार नय की उपयोगिता ---------- २४-२७

उपदेश देने का पात्र ---------- २८-२८

पुरुष (आत्मा) का स्वरूप ---------- २९-४४

जीव स्वयं कर्ता भोक्ता है ---------- ४४-५०

पुरुषार्थ सिद्धि का उपाय ---------- ५०-५५

जीव और कर्म में निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध ---------- ५५-६२

अज्ञानी जीवों की समझ ---------- ६२-६६

पुरुषार्थ सिद्धि का उपाय ---------- ६६-६८

मुनियों की अलौकिक वृत्ति ---------- ६८-७०

एक देश व्रत किसे देना ठीक है ---------- ७०-७५

दंडनीय उपदेश और उपदेश का क्रम ---------- ७५-८३

सम्यग्दर्शन का पहले ग्रहण क्यों ---------- ८४-९७

सम्यग्दर्शन का स्वरूप ---------- ९७-१३५

सम्यग्दर्शन के आठ अंगो का स्वरूप ---------- १३५-१६०

सम्यग्ज्ञान का विवेचन ---------- १६०-१८०

सम्यक् चारित्र का स्वरूप ---------- १८०-१८३

हिंसाका सव्यापक स्वरूप ---------- १८३-२०८

अष्ट मूल गुण ---------- २०८-२१९

धर्मोपदेशॉ पाने के पात्र ---------- २१९-२३६

असत्य का लक्षण ---------- २३७-२४६

चोरी का लक्षण ---------- २४६-२५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैथुन का लक्षण ---------- २५१-२५४
परिग्रह का लक्षण ---------- २५४-२६६
सम्यग्दर्शन के घातक चोर ---------- २६६-२७१
रात्रिभोजन का त्याग ---------- २७१-२८०
सप्त शील पालने की आवश्यकता ---------- २८१-२९६
सामायिक का स्वरूप ---------- २९६-३००
प्रोषधोपवास का वर्णन ---------- ३००-३०८
भोगोपभोगपरिमाणव्रत ---------- ३०८-३१५
अतिथिसंविभाग व्रत ---------- ३१५-३२९
सल्लेखना का स्वरूप ---------- ३२९-३३५
अतीचारों की संख्या ---------- ३३५-३७२
तप का विधान ---------- ३७२-३७९
मुनिवृत्ति धारण करने का उपदेश ---------- ३७९-३८०
षट् आवश्यक ---------- ३८०-३९३
गुप्तित्रय ---------- ३९३-३९४
पंच समिति ---------- ३९४-३९५
दश धर्म ---------- ३९५-३९८
द्वादश अनुप्रेक्षा ---------- ३९८-४०७
परिषह जय ---------- ४०७-४१५
मुनिधर्म गृहस्थ को भी पालन करना चाहिये ---------- ४१५-४१७
गृहस्थों को भी मुनिपद धारण करना चाहिये ---------- ४१७-४१७
रत्नत्रय कर्मबन्ध का कारण नहीं है ---------- ४१७-४१८
रत्नत्रय और राग का फल ---------- ४१८-४२१
बंध का कारण ---------- ४२१-४२५
रत्नत्रय से बंध क्यों नहीं होता ---------- ४२५-४२६
रत्नत्रय तीर्थंकरादि प्रवृत्तियों का भी बंधक नहीं है---------- ४२६-४२९
सम्यक्त्व को देवायु का कारण क्यों कहा गया है ---------- ४२९-४३०
भिन्न भिन्न कारणों से भिन्न भिन्न कार्य होते हैं ---------- ४३०-४३१
रत्नत्रय मोक्ष लाभ कराता है ---------- ४३१-४३२
परमात्मा की मोक्षावस्था ---------- ४३२-४३२
परमात्मा का स्वरूप ---------- ४३२-४३४
जैन नीति अथवा अपेक्षा विवेचना ---------- ४३४-४३७
ग्रन्थ समाप्त करते हुए आचार्य अपनी लघुता बताते हैं ---------- ४३७-४३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org